उहद के शहीद

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

2 हिजरी की मशहूर जंग ''बद्र'' के ज़ख़्म खाए हुए मुश्रिकों ने मुसलमानों पर चढ़ाई का फिर इरादा किया और चौथी शव्वाल 3 हिजरी बुद्ध के रोज़ अबुसुफ़यान की कमाण्डरी में एक लश्कर मदीने के बिल्कुल क़रीब आकर ठहर गया जिसके साथ हर तरह का जंगी सामान और उसमें तीन हज़ार हथियारबन्द सिपाही और बड़े तर्जुबे वाले लोग मौजूद थे। सरवरे काएनात[स०] इस ज़बरदस्त लश्कर का मुक़ाबला करने के लिए एक हज़ार मुसलमानों के साथ मदीने से बाहर तशरीफ़ लाए मगर अब्दुल्लाह बिन उबई अपने तीन सौ साथियों को ये कहकर वापस ले गया कि हम मदीने के बाहर जंग नहीं करेंगे बल्कि अगर दुश्मन ने शहर पर हमला कर दिया तो उस वक़्त लड़ेंगे। इस मुनाफ़िक़त की चाल के बाद इस्लामी फ़ौज में सिर्फ़ सात सौ सिपाही रह गए थे। ''उहद'' एक मशहूर पहाड़ का नाम है जो मदीना मुनव्वरा से उत्तर की तरफ़ तक़रीबन दो मील पर है। इसी पहाड़ के सामने ये ख़ूनभरी लड़ाई हुई थी। मुसलमानों ने अपने पीछे की तरफ़ पहाड़ को लेकर दुश्मनों का मुक़ाबला किया। इस्लामी फ़ौज के पीछे की तरफ़ एक घाटी थी जिस से दुश्मनों के हमले का हर वक़्त ख़तरा था इसलिए रसूल[स०] ने उस घाटी की हिफ़ाज़त के लिए पचास तीर चलाने वालों को लगा दिया था ताकि पीछे की तरफ़ से काफ़िर हमला न कर सकें।

लड़ाई शुरु हुई। पहली बार मुसलमानों को ज़बरदस्त जीत मिली और काफ़िरों की फ़ौज ने मैदान छोड़ दिया। और सारे लोग काफ़िरों के छोड़े हुए माले ग़नमीत को लूटने में लग गए। यह देख कर तीर चलाने वाले दस्ते ने भी अपनी जगह छोड़ दी और अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके कुछ साथियों के अलावा सब लूट में शामिल हो गए। काफ़िरों की फ़ौज ने जब ये हालत देखी तो उसने पीछे से मुसलमानों पर हमला कर दिया। इस अचानक हमले का ये असर हुआ कि पूरी इस्लामी फ़ौज में अफ़रातफ़री फैल गई। अब्दुल्लाह बिन जुबैर और उनके तीर चलाने वाले साथी भी सब शहीद हो गए। मुसलमानों के सत्तर सिपाही इस जंग में काम आ गए। मगर ग़रीबी का ये हाल था कि लाशों को छुपाने के लिए कपड़ा भी मौजूद न था। हज़रत मुस्अब बिन उमैर जो बहुत ही ख़ूबसूरत और रसूल[स०] की शक्ल व सूरत में कुछ मिलते थे, उनकी लाश को जब चादर से छुपाया जाने लगा तो कभी सर खुल जाता और कभी पैर फिर रसूल[स०] के हुक्म से उनके सर को बन्द कर दिया गया और पैरों पर घास डाल दी गई।

उहद के मैदान में जो मुहाजिर और अंसार शहीद हुए थे उनमें से कुछ ये हैं:- बनी हाशिम में: हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब[अ०] जो रसूल[स०] के चचा भी थे और दूध शरीक भाई भी। आपकी बहादरी अरबों में मिसाल के तौर पर पेश की जाती थी। उहद की जंग में आपने बहादरी के वह जौहर दिखाए जो तारीख़ में हमेशा यादगार रहेंगे। हज़रत हमज़ा[अ०] को धोके से जुबैर बिन मुतइम के ग़ुलाम ने शहीद किया जिसका नाम ''वह्शी'' था। और आपकी लाश को हिन्द और दूसरी काफ़िर औरतों और मर्दों ने इस तरह ''मुसला'' किया जिसकी मिसाल ज़ुल्म और ज़्यादती की तारीख़ में नहीं मिलती। इसी जंग में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश जो रसूलुल्लाह[स०] के साले और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के नवासे थे,

शेष........ पेज 14 पर

है वह अपने बाप-दादा का दीन छोड़कर उसका दीवाना हो जाता है, इसलिए उसके धोके में कभी भी न आना। रसूले अकरम ने फ़रमायाः मेरे लिए आपके मश्वरे पर अमल करना मुमकिन नहीं है। बूढ़ी औरत के माथे पर बल पड़े। तुम्हारी भलाई के लिए इतना अच्छा मश्वरा दे रही हूँ और तुम इनकार कर रहे हो। फ़रमाया इस लिए मुमकिन नहीं कि जिस मुहम्मद[स॰] से आप दूर हो जाने का मश्वरा दे रही हैं वह मुहम्मद[स॰] तो मैं खुद हूँ। ये सुनना था कि वह हैरत में पड़ गई। सकते में आ गई। तुम ही मुहम्मद हो? फ़रमाया, हाँ मैं ही हूँ। अब इस बूढ़ी ख़ातून के जुमले देखिये, कहती है ''मेरे रिश्तेदार देख रहे थे कि मुझ से मश्क नही उठ रही है, मगर कोई आगे न बढ़ा। मेरे क़बीले वाले देख रहे थे मुझे मदद की ज़रूरत है, मगर मदद न की, लेकिन तुम ने न ये पूछा कि मैं कौन हूँ न मेरा मज़हब पूछा, बल्कि फ़ौरन मदद के लिए आ गए। अब मैं समझी कि तुम्हारा जादू क्या है। तुम्हारा जादू तुम्हारा अख़लाक़ है, तुम्हारा जादू तुम्हारा किरदार है।'' इस वाक़िए से जहाँ एक हक़ीक़ी मुसलमान के फ़राएज़ का अंदाज़ा होता है, वहाँ दूसरी तरफ़ इन इस्लाम दुश्मनों के इस प्रोपगण्डे का क़िला धवस्त होता है कि रसूले इस्लाम[स॰] के एक हाथ में तलवार थी और एक हाथ में क़ुरआन और उन्होंने इस्लाम तलवार के ज़ोर पर फैलाया।

आज से चौदह सौ साल पहले इस्लाम ने सिर्फ़ इंसान ही नहीं, बल्कि जानवरों के हुक़ूक़ का भी लेहाज़ रखा है। एक मौक़े पर रसूल ने जानवरों के छः हुक़ूक़ बयान फ़रमाए हैं:- (1) जब अपनी मंज़िल पर पहुँचो तो अपनी ग़िज़ा और पानी की फ़िक्र बाद में करो, पहले अपनी सवारी के जानवर को सैर सैराब करो (2) सफ़र के बीच में जहाँ कहीं पानी नज़र आए, वहाँ जानवर को ले जाओ (3) जानवर के चेहरे पर न मारो (4) सवारी के जानवर पर बैठे-बैठे कोई दूसरा काम न करो। सफ़र पूरा होते ही उतर जाओ। जैसे कि ऐसा न हो कि सवारी पर बैठे-बैठे आपस में लम्बी बातचीत शुरु कर दो (5)जानवर पर उसकी ताक़त से ज़्यादा सामान न लादो (6) जानवर की ताक़त से ज़्यादा सफ़र न करो। जानवर के सिलसिले में इतनी छोटी-छोटी बातों का ख़याल इस्लाम ने रखा है, जिनका पुराने ज़माने में सोचना भी मुश्किल था। (बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 20 मई 2011[ई॰])

(जारी)

शेष.......... उहद के शहीद

शहीद हुए। बनू अब्दुद्दार की अज़ीम शख़सियत हज़रत मुस्अब बिन उमैर भी इसी जंग में काम आए जिनकी ख़ूबसूरती का क़ुरैश में जवाब न था और जिन्होंने रसूल[स॰] की मुहब्बत में दुनिया का हर आराम छोड़ दिया था। अंसार में से जो लोग शहादत पाए उनमें हज़रत हंज़ला (जिनको फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल दिया) का नाम सब ही जानते हैं। ये ख़िताब उन्हें खुद रसूल[स॰] ने दिया था क्योंकि फ़रिश्तों ने उन्हें ग़ुस्ल दिया था।

उहद के शहीदों में अनस[रज़ि॰] बिन मालिक के चचा अनस बिन नज़्र भी थे जिनकी लाश में सत्तर घाव के निशान पाए गए। अल्लामा सुहैली ने लिखा है कि क़बीला बनु दिबनार की एक औरत का शौहर, भाई और बाप सब उहद की जंग में शहीद हो गए। और जब लोगों ने उसको उनकी मौत की ख़बर सुनाई तो बजाए उन पर ग़म करने के उसने पूछा कि खुद रसूल[स॰] किस हाल में हैं? और फिर दौड़ती हुई आई और जब रसूल[स॰] को सही सालिम देखा तो खुश होकर कहने लगीः ''हुज़ूर[स॰] सलामत रहें तो फिर हमें किसी मुसीबत की भी कोई परवाह नहीं है।'' लोग चाहते थे कि अपने-अपने रिश्तेदारों की लाशों को मदीने में दफ़न करें लेकिन रसूल[स॰] ने हुक्म दिया कि सबको उहद के मैदान में दफ़न किया जाए।

रसूल[स॰] के चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब[अ॰] की क़ब्र उहद पहाड़ के ठीक सामने है। आपकी एक बड़ी ख़ास बात ये थी कि आपकी जनाज़े की नमाज़ में रसूल[स॰] ने सत्तर तकबीरें कहीं थीं।